लर्निंग लॉस को कम करने में मददगार

विविध तरह के बाल साहित्य का उपयोग करते हुए बच्चों की आधारभूत दक्षताओं को मजबूत बनाया जा सकता है। कोविड के इस दौर में जब बच्चे काफी सारी दक्षताओं को भूल गये हैं उसमें बाल साहित्य की भूमिका और ज्यादा बढ़ जाती है। रोचक कहानियों व कविताओं के जरिये बच्चों को आनंददायक तरीके से भूली हुई दक्षताओं से दोबारा जोड़ना आसान होगा।

– अवनीश मिश्र

कोरोना के चलते परिस्थितियां बिलकुल बदली हुई हैं। एक ऐसी क्षति जो प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी। किसी की बातों को सुनकर आनंद की अनुभूति होती है तो किसी के जज्बात सुनकर ज़ेहन में सिहरन सी उठती है। इस अनचाही परिस्थिति ने न केवल बच्चों के सीखे हुए को प्रभावित किया बल्कि हर उस अवसर को छीन लिया जो बच्चों के हर तरह के कौशलों के विकास के लिए जरूरी था। इसे एक से लेकर आठ तक सभी कक्षाओं में महसूस किया जा सकता है। ऑनलाइन का सीमित दायरा इसकी भरपाई करने में फिसड्डी साबित हुआ।

नेटवर्क, डेटा, एंड्रायड फोन की समस्या, शिक्षा ले रहे पहली पीढ़ी के बच्चे, बच्चों को पर्याप्त पोषण न मिलना, संवेदनात्मक रूप से आहत जनमानस, लड़कियों का अधिक समय गृहस्थी के कामों में गुजरना और पेट की भूख शांत करने के लिए दैनिक दिहाड़ी का जुगाड़ करते अभिभावकों द्वारा बच्चों पर पर्याप्त ध्यान न दे पाना आदि लॉकडाउन की बड़ी त्रासदियां हैं। इन त्रासदियों की भरपाई करना सहज नहीं है। इस परिस्थिति ने कुछ हद तक सीखने और समझने के विविध तरह के अवसर भी दिए। जैसे स्कूल होने के मायनों और पढ़ने–लिखने की रोचक, सरल, सहज और असरदार प्रक्रियाओं को खोजना, बच्चों की बुनियादी दक्षताओं–समग्रता में शिक्षण एवं संज्ञानात्मक विकास के लिए साथ मिलकर सीखने–समझने का कोई विकल्प न होना आदि।

लॉकडाउन के लगभग दो साल बाद स्कूल खुलने पर संवेदनात्मक और भावनात्मक रूप से घटी घटनाओं से आहत बच्चों को स्कूल में बैठाने, किसी मुद्दे पर चर्चा करने और उन्हें पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ना एक टेढ़ी खीर रहा है। शिक्षक के लिए असमंजस की

स्थिति है कि इस चुनौती से कैसे निपटा जाए। एक ही कक्षा में सीखने और समझने के कई स्तर दिखाई देते हैं। कोई बच्चा कल्पना और अनुमान लगाकर शुरुआती पढ़ने की दहलीज पर है तो कोई अक्षर–मात्रा की उलझाऊ दुनिया को सुलझाने का प्रयास कर रहा है। कोई शब्दों और वाक्यों के ताने–बाने को समझने में प्रयासरत है। इसी तरह जो बच्चे पहले समझ आधारित पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया में थे, वे अब पढ़ने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। शब्दों व वाक्यों को अटक–अटक कर पढ़ रहे हैं। उन्हें प्रिंट में लिखी सामग्रियों को पढ़ने और उसकी समझ साझा करने में चुनौती महसूस हो रही

है। लिखने में भी शाब्दिक–मात्रिक गलतियां कर रहे हैं। अपने विचारों को वाक्यों में गूंथने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। किसी भी विषय पर मौखिक व लिखित रूप से अभिव्यक्ति करने और चर्चा–परिचर्चा करने में भी कठिनाई का सामना कर रहे हैं। यह चिंताजनक स्थिति है कि कक्षा तीन से लेकर आठ तक की बुनियादी दक्षताओं (सुनना–बोलना, सोचना, समझना, अर्थ निर्माण करना, धाराप्रवाह पढ़ना, समझकर लिखना, रचनात्मक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति) में हुई क्षति की भरपाई कैसे की जाए। बच्चों को आधारभूत कौशलों को हासिल कराने के साथ उन्हें कक्षावार आवश्यक दक्षताओं से कैसे जोड़ा जाए।

अलग–अलग स्तर के बच्चों के लिए सीखने की क्षति को पहचानने और पहचानकर उसकी भरपाई करने के लिए निरन्तरता में प्रयास कैसे किया जाये। इसके साथ ही कक्षावार बुनियादी सीखने के प्रतिफलों के आधार पर प्रत्येक बच्चे की प्रगति को सुनिश्चित कैसे किया जाए। ऐसे में बच्चों में हुई क्षति के स्तर की पहचान कर उनके समूह बनाना और उन्हें अपेक्षित सीखने के स्तर पर लाने के लिए बहुत ही व्यवस्थित योजना के साथ कार्य करने की आवश्यकता दिखाई देती है। ऐसे संसाधनों की खोज करने की जरूरत है जो सीखने की प्रक्रिया को आनंददायी बनाने में सहायक हो।

यह संसाधन पाठ्यपुस्तक में शामिल मजेदार पाठ, बच्चों की बहुरंगी दुनिया के रोचक किस्से, विविध तरह के बाल साहित्य, टीएलएम आदि हो सकते हैं। इन सामग्रियों का योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करते हुए हर स्तर के बच्चे को सरलता और सरसता के साथ पढ़ने–लिखने की दुनिया से जोड़ा जा सकता है। विविध तरह के बाल साहित्य का उपयोग करते हुए बच्चों की आधारभूत दक्षताओं को मजबूत बनाया जा सकता है। अभी के दौर में जिस तरह के माहौल की जरूरत है, उसका एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य विकल्प बाल साहित्य नजर आता है। जब बाल साहित्य का नाम आता है तो मन रोमांच से भर जाता है। आंखों के सामने रंग–बिरंगे चित्रों वाली छोटी–छोटी पुस्तकें नाचने लगती हैं। इनमें साहसी बच्चे और पशु–पक्षियों की कहानियां होती हैं, जो बच्चों को एक अलग ही संसार में ले जाती हैं। जहां पर बच्चे ही नहीं बड़े भी कल्पनाओं के सागर में गोते लगाने लगते हैं और उस पल में कहानी में आये पात्रों को अपने में जीने लगते हैं। बाल साहित्य स्वतः ही बच्चों में अप्रत्यक्ष तौर पर मानवीय मूल्यों और संवेदना का विकास करता रहता है। वह तर्क करने और सोचने–समझने का अवसर पैदा करता है। बच्चों को एक स्वंतत्र कोना देता है, जिसमें बच्चे अपनी कल्पनाओं को आधार देते हैं। उनकी रचनात्मकता का विकास होता है, विभिन्न परिप्रेक्ष्य को जानने समझने का मौका मिलता है। पढ़ने–लिखने की नीरस दुनिया में हलचल पैदाकर बच्चों को आत्मविश्वासी बनाने के साथ उत्साही पाठक बनने में आधार का काम करता है। जब बच्चा कोई कहानी या कविता पढ़ता है तो उसके लिखे हुए से रू–ब–रू होता है। साथ ही वाक्य सरंचना व नये शब्दों से परिचित भी होता है।

बाल साहित्य में किताबों–कॉपियों में भाषा को कैद करने की अपेक्षा मुक्त करने, विचारों और भावों को पनपने देने की गुंजाइश अधिक दिखाई देती है। जिससे एहसास मिलता है कि भाषा हमारे चारों तरफ (टी.वी., मोबाईल, चॉकलेट–टॉफी–बिस्कुट के रैपर, अखबार, विज्ञापन, चित्रों, किताबों, बोलचाल आदि में) बिखरी हुई है। वह बच्चों के साथ बड़ों को भी स्वतंत्र रूप से अपने विभिन्न तरह के अनुभवों को मौखिक और लिखित रूप से अभिव्यक्त करते हुए सृजन की दुनिया में कदम रखने का अवसर देती है। इस तरह से आधारभूत दक्षता से जुड़े बुनियादी सीखने के प्रतिफलों (दूसरों की बातों को रुचि के साथ और ध्यान से सुनना, अपने अनुभव–संसार और कल्पना–संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना, अलग–अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना जैसे बोलकर, इशारों से, 'साइन लैंग्वेज' द्वारा, चित्र बनाकर, स्तरानुसार कहानी, कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और उन्हें मजे से सुनना और सुनाना, देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उसके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया या टिप्पणी मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करना, सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना, स्तरानुसार कहानी, कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना, लिपि–चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना, चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना आदि) को हासिल करने में बाल साहित्य की भूमिका अनिवार्य लगती है।

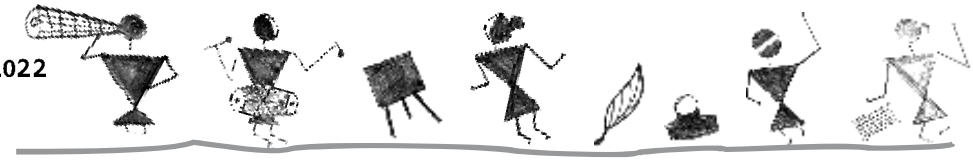

शोध और फील्ड के अनुभव बताते हैं कि ऐसे बाल साहित्य को बच्चे अधिक पसंद करते हैं, जो उनकी दुनिया से जुड़े हों। आनंद देने के साथ कौतूहल, संघर्ष, चुनौती, रोमांच से भरी हो। कॉमिक्स और कार्टून को पसंद किया जाना इसका एक आधार हो सकता है। विविध शिल्प में तराशे गये बाल साहित्य चित्र, कविता, कहानी के जरिये बच्चों की दुनिया से आसानी से जुड़ जाते हैं। बच्चों की प्रवृत्ति जिज्ञासु और खोजबीन वाली होती है। बच्चों को किताबें भी ऐसे ही पसंद आती हैं, जिसमें कुछ रहस्य छुपा हो। ऐसे बाल साहित्य उत्कृष्ट होते हैं जो बच्चों को सोचने–समझने–अभिव्यक्त करने पर विवश करे न कि पहले से निर्धारित निष्कर्ष पर पहुंचाता हो। ऐसा बहुत सा बाल साहित्य है जिसे बार–बार पढ़ने का मन करता है और हर बार नए तरह की सोच पैदा होती है जैसे ईदगाह, बिल्ली के बच्चे, कजरी गाय और चार दोस्त आदि।

जी ललचाये रहा ना जाए– एकलव्य, बरखा सीरीज, नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्था और इकतारा प्रकाशन के अनेक बाल साहित्य बच्चों को आनंद देने के साथ दुनिया को देखने–समझने के अनेक नजरिये देते हैं। ***भालू ने खेली फुटबाल, पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ, खिचड़ी, बिल्ली के बच्चे, एक अनोखी राजकुमारी, पहाड़ और परी का सपना, चौड़े मुंह वाली मेंढकी, घुड़सवार, बालटी के अंदर समन्दर, ऊलजलूल, आखिर भेड़िये को दुष्ट क्यों कहते हैं, कहानी केलों की, सो जा उल्लू, बिक्सू, महागिरी, चार चने होते, छुपमछुपाई, लकड़ी की काठी, बहुत जुकाम हुआ नंदू को, पैसा पास होते तो चार चने लाते, स्कूल में प्रणव का पहला दिन*** जैसी शानदार किताबें किसी का भी मन मोह लेने की क्षमता रखती हैं। इनसे जुड़ी विविध गतिविधियां बच्चों को स्कूल में मन लगाने, ठहराव के साथ बैठने, पढ़ने–लिखने की दुनिया से जोड़ने, अनुभव को जोड़ने, नये शब्दों से गुजरने, संवाद करने और आनंद के साथ सृजन करने के भरपूर मौके देते हैं।

'स्कूल में प्रणव का पहला दिन' बच्चों के स्कूल आने के एहसास को समझने में मदद देता है। ***'बिक्सू'*** झारखण्ड राज्य के एक गाँव से बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए निकले विकास कुमार उर्फ बिक्सू की कहानी है जिसे दाखिले के बाद अपने बँधे होने का अहसास होता है। इस बँधन में गाँव की याद है और आँसुओं की धार भी है। लेकिन रोने का सिलसिला भी रुकता है और बिक्सू को आगे बढ़ने की राह भी मिलती है। वह रास्ता होता है लोगों से दोस्ती करने का। इस दोस्ती का सफर कहाँ तक जाता है इस किताब में पढ़ सकते हैं। मधुबनी शैली में बने चित्र आकर्षक हैं। खेल से जुड़ी गतिविधियों के साथ ***'भालू ने खेली फुटबॉल'*** जैसे साहित्य आनंद के साथ पढ़ने की दिशा में एक कदम रखने जैसा होगा। इसमें बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेलों की सूची बनवाना लिखने का काम हो सकता है। प्रत्येक खेल की प्रक्रिया लिखना और उसे बोलकर पढ़ना, लिखे हुए को दीवार पत्रिका पर चस्पा करना एक रोचक गतिविधि हो सकती है। इसी तरह बच्चों के साथ मिलकर नये–नये खेल, उसके नियम बनाना, खेल को नाम देना, उससे जुड़े चित्र बनाना जैसी सहज गतिविधियां हो सकती हैं। इसमें अभी के सन्दर्भ में प्रत्येक कक्षा में अक्षर–मात्रा की गलतियां करने के भरपूर मौका देना जायज लगता है।

बात करने से बनती है बात। अभी की परिस्थिति में सबसे अधिक जरूरत बच्चों से संवाद कायम करने की है। वे चाहते हैं कि उनके एहसास को सुना जाए। इससे मैत्री की भावना भी प्रगाढ़ होगी। बाल साहित्य बच्चों को आजादी के साथ अपनी बात, अनुभव एवं प्रतिक्रिया को मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करने का अवसर देता है। चर्चाओं से उनकी नए शब्दों के अर्थ बूझने की आदत को गति मिलती है। वे बेहतर अनुमान लगा पाते हैं। बातचीत में चित्र, शीर्षक, कहानी, कविता का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इसे पढ़ने–लिखने का जरिया बनाया जा सकता है। कक्षा तीन की आरिफा अब कक्षा पांच में पहुंच चुकी है। किताबों की दुनिया से बढ़ी दूरियों को पाटने की कोशिश करती नजर आ रही है। ***'चाय', 'जलेबी', 'दूध जलेबी जग्गग्गा'*** साहित्य पर थोड़ी बातचीत करने और प्रोत्साहित करने पर खुद से अपनी पसंदीदा 'बाल मिठाई' पर कविता गढ़ने का आत्मविश्वास पा रही है। इसी तरह थोड़ी बातचीत करते हुए अशुद्धियों को अनदेखा करके बच्चों को चिट्ठी लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। स्कूल खुलने से पूर्व की परिस्थिति और स्कूल आने पर उन्हें कैसा महसूस हो रहा है, बातचीत का एक सन्दर्भ हो सकता है।

अक्षर–मात्रा पहचान के रोचक तरीके–

कविता–कहानी में आये आसान शब्दों से बच्चों को अक्षर मात्रा की पहचान कराने की रोचक गतिविधि हो सकती है। कविता–कहानी में आये पात्रों, वस्तुओं पर शुरुआती

कक्षाओं के बच्चे मुक्त रूप से गोदागादी और मनपसंद आकृतियां गढ़ते हैं। इससे उनके हाथ की मांसपेशियां लचीली और लिखने की प्रक्रिया रोचक बनती है। बच्चे उन आकृतियों को पहले बनाते हैं, जो उनके देखे हुए और परिवेश में उपलब्ध होते हैं।

आजादी के साथ पढ़ने-लिखने के अवसर- स्कूल में प्रतिदिन प्रदर्शित बाल साहित्य से बच्चों को स्वयं से पुस्तकों को चुनने और उससे गुजरने के लिए निरंतर प्रेरित करते रहना चाहिए। इससे किताबों के प्रति उनमें मोह पैदा होगा। मौखिक और लिखित रूप से पढ़ी सामग्री पर अपनी मौलिक राय रखने के साथ धीरे–धीरे पुस्तकों के अंदर की बहुरंगी दुनिया को जल्दी से जान लेने जिज्ञासा होगी। इससे साप्ताहिक पढ़ी गयी पुस्तकों की सूची तैयार करना, *'मेंढक का नाश्ता'* जैसी छोटी कहानी पर एकल अभिनय करना, समूह में मिलकर रोल प्ले करना, जोड़े में पढ़ना–राय बनाना, मिलकर कहानी–कविता का मौलिक लेखन करना, चित्र रूप में अभिव्यक्त करना, प्रश्नावली तैयार करना, शब्दकोश तैयार करना, पहेलियां लिखने, स्थानीय किस्सागो को स्कूल में आमंत्रित कर बच्चों से धैर्य से सुनने और साक्षात्कार रूप में प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना जैसी गतिविधियां स्कूल में आनंद के साथ सृजन करने का वातावरण बनाने में सहायक होती हैं।

शिक्षक और अभिभावक की भूमिका- लॉकडाउन से उभरी इस परिस्थिति में बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए शिक्षक और समुदाय दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एक मार्गदर्शक के रूप में सीखने–सोचने–समझने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करने और मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने जैसी भूमिका अनिवार्य है। इस सन्दर्भ में 'स्कूल में आज तुमने भला क्या पूछा' जैसे साहित्य सहायक साबित हो सकते हैं। यदि निरन्तरता में बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक बाल साहित्य पढ़ते हैं और पढ़कर अपनी राय और अनुभव साझा करते हैं तो बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ती है। इसके साथ ही बिना झिझक और भय के अपनी बातों को साझा करने में उनका आत्मविश्वास भी दोगुना होता है।

बाल साहित्य से जुड़ते हुए बच्चों के अनुभव को डायरी लेखन, लॉकडाउन के अनुभव पर लेखन, पत्र लेखन, यात्रा वृत्तान्त या समाचार लेखन के रूप में व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना भी पढ़ने और लिखने की दुनिया को सरल और सहज बना देती है। शिक्षक, बच्चे और अभिभावक मिलकर लोकगीतों और लोककथाओं का संग्रह कर सकते हैं। स्कूल में मौजूद सारे बाल साहित्य से खुद गुजर जाने और बच्चों को गुजार लेने के बाद दूसरे स्कूल के बाल साहित्य से अदला–बदली की जा सकती है। इस तरह से न तो किताबों का टोटा होगा और बच्चों के लिए किताबें कभी बासी भी नहीं होगी। बच्चों के साथ बैठकर किसी तुकांत कविता की लय–धुन तैयार कर उसे गाया जा सकता है। ऐसे ही मिलकर उत्कृष्ट कहानियों पर नाट्य भी तैयार कराया जा सकता है।

किताबें बच्चों की पहुंच में- बच्चों के सहयोग से किताबों को उनके पहुंच में व्यवस्थित करना चाहिए ताकि वे निसंकोच भाव से उसे उठाकर उलट–पलट सकें। आकर्षक सजावट और बच्चों के खुद की कलात्मकता–सृजनात्मकता–मौलिकता से सजे किताबों के कोने अनायास ही मन मोह लेते हैं। इससे उन्हें अपनापन लगता है, लगाव पैदा होता है और वे स्वयं से उसके रख–रखाव व नियमित संचालन की जिम्मेदारी ले लेते हैं। धीरे–धीरे वे किताबों को घरों में ले जाते हैं। अपने अभिभावकों और छोटे भाई–बहनों को दिखाते और सुनाते हैं। बाल लाइब्रेरी में उन किताबों अथवा सामग्री को शामिल करना अधिक ठीक होता है, जो पाठयपुस्तक में दी गई अंतर्वस्तु, थीम का विस्तार करती हो। जैसे यदि पाठयपुस्तक में मानसून पर कोई कविता है तो बारिश पर आधारित कहानियों, कविताओं और यहां तक कि मौसम का अनुमान बताने वाली किताबों को पढ़ने के कोने में शामिल करना एक सार्थक तरीका हो सकता है।

इस तरह से वैविध्यपूर्ण बाल साहित्य बच्चों के सामने भाषा का एक जीवंत संसार लाता है। उससे बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करने, समझ के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करने, भाषा शिक्षण की आधारभूत दक्षताओं को हासिल करने, सहज अभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकसित करने, तरह–तरह के टेक्स्ट की सामग्री की समझ बढ़ाने के साथ सृजनात्मक क्षमता (चित्र बनाना, पात्र, घटना, स्थान आदि बदलकर कहानी से कविता या कविता से कहानी, कहानी को आगे बढ़ाना, कहानी का हाव भाव के साथ प्रस्तुतिकरण, चित्र से कहानी बता पाना) विकसित होती है। हर बच्चा अपनी गति से सीखता और अपनी शैली में व्यक्त करता है। जरूरत है रोचक प्रक्रियाओं और उचित संसाधनों को अपनाने की। उन पर विश्वास करने के साथ–साथ समय, अवसर और आजादी देने की।
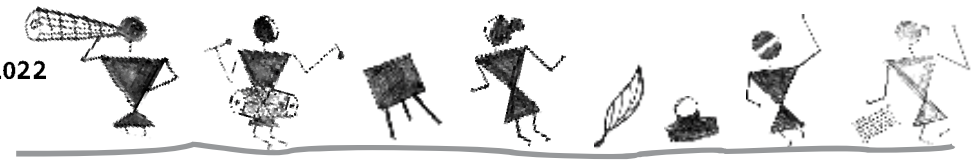
(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टिहरी, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)।